रीतिकाल की आलोचना

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कालेज, हाजीपुर

शेषांश :—

* द्विवेदी जी भक्त कवि नंददास को प्रथम नायिकाभेद लिखनेवाला कवि मानते हैं, जिन्होंने 'रस-मंजरी' लिखी थी। नंद-दास की इस पुस्तक में द्विवेदी जी ने 'बड़े कौशल से लौकिक-सी दिखनेवाली बात में अलौकिक तत्व के संकेत' को लक्षित किया है। द्विवेदी जी के अनुसार 'अलंकार और रस के वास्तविक विवेचक केशवदास ही हैं। वे मानते हैं कि केशवदास का उद्देश्य काव्या-भ्यास का ज्ञान कराना है। 'रसिकप्रिया'

में वे भगवद्भक्ति को प्रधानता देते दिखाई देते हैं। इस प्रकार पहले-पहल जिन कवियों ने नायिका-भेद पर ग्रंथ लिखे हैं, उन्होंने कुछ-न-कुछ भगवद्भक्ति का पुट अवश्य दिया है।

द्विवेदी जी रीतिकाल को रुग्ण मनोभावों का काल बताते हुए कहते हैं कि ~~इस काल~~ इस काल की शृंगार भावना में एक प्रकार का रुग्ण मनोभाव है। इस युग के साहित्य में रसिकता और औदार्य उतना नहीं है, जितना एक प्रकार की मानसिक थकान से पिंड छुड़ाने का बहाना है। रीतिकालीन साहित्य में नारी पुरुष के आकर्षण का एक केन्द्र-मात्र है। उसका सामाजिक अस्तित्व कुछ भी नहीं है।

— क्रमशः